

दोषी कौन?

ज्ञानखंड में अवैध निर्माण व अतिक्रमण बड़ी समस्या बन कर सामने आ रही है। इसे हटाने को लेकर अभी तक कोई कारण कदम का नहीं उठाया जाना समझा से परे है। ऐसे बात भी नहीं है कि कारबाई नहीं होती है। वर्ष दिखावे के लिए।

शहर के तालाब, पोखर और नदियां अतिक्रमणकारियों के कब्जे में हैं। ऐसे में इस ओर सरकार को ध्यान देने की जरूरत है। ऐसा नहीं होने के स्थिति में आने वाले दिनों में स्थितियां और भवानक होने की संभावना है। ग्राज्य में वह समस्या बड़ी है। देखा जाये तो कई जगहों पर शांतिप्रिय लोगों के निजी जीवन इससे प्रभावित हो रहे हैं। यह गिरोह पहले उत्तर जमीन को कब्जा करने के लिए किसी संस्थान या धार्मिक स्थल का झंडा गाड़ा है। बाद में धीरे-धीरे उस जमीन को कब्जा करता है। इस काम में सबकी सहभागिता रहती है।

धीरे-धीरे उस जमीन को कब्जा करता है। इसका नाम का यूँशन करकर उसे बदल दिया जाता है। ऐसे कारनाम राज्य के कई हिस्सों में बदल दिया जाता है। इसे रोकथाम की दिशा में होने वाले प्रयास इमानदारी से नहीं किये जा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति और भवानक होने की जरूरत है। ऐसा नहीं होने की स्थिति में आने वाले दिनों में स्थितियां और भवानक होने की संभावना है। ग्राज्य में वह समस्या बड़ी है। देखा जाये तो कई जगहों पर शांतिप्रिय लोगों के निजी जीवन इससे प्रभावित हो रहे हैं। यह गिरोह पहले उत्तर जमीन को कब्जा करने के लिए किसी संस्थान या धार्मिक स्थल का झंडा गाड़ा है। बाद में धीरे-धीरे उस जमीन को कब्जा करता है। इस काम में सबकी सहभागिता रहती है।

प्रकृति

बेहिसाब नकदी की बरामदगी ने कांग्रेस व कैश को पर्यायवाची शब्द बना दिया



देखा जाये तो मोदी सरकार जब भूष्याचारियों के खिलाफ ईडी की छापेमारी करवाती है तो घर्मण्डिया गठबंधन के सारे नेता एकत्र हैं कि लोकतंत्र की हत्या की जा रही है।

कांग्रेस के राजसभा सांसद धीरज प्रसाद साह के परिसंग से नकदी के चला, कांग्रेस के नेताओं ने उद्योगप्रौद्योगिक अडानों पर निशाना उठाये हैं जो निवारित कर दिया था लेकिन जल्द ही पार्टी में उनकी बहाली भी हो गयी थी। कांग्रेस के नेताओं ने 'चौकीदार चोर' का नाम दिया जाने के बाद मुआवजे की मांग की जाती है। राजनीति के दलदल में एक विषेष समृद्धि को सुख करने के लिए कोई कुछ नहीं बोलता है। वह अच्छी परंपरा नहीं है। स्वभाविक सी बात है कि अगर कोई नई में भर भवानया तो पानी आवंगा ही। अखिल उस आवंगी को बसने की खुली छूट किसे दी? इन सवालों के ज़ंगल में आज भी कई अनुरूपत फ्रेश आ खड़े हो जाते हैं। बावजूद उसका उत्तर किसी के पास नहीं है।

कांग्रेस के राजसभा सांसद धीरज प्रसाद साह के परिसंग से नकदी के चला, कांग्रेस के नेताओं ने उद्योगप्रौद्योगिक अडानों पर निशाना उठाये हैं जो निवारित कर दिया था लेकिन जल्द ही पार्टी में उनकी बहाली भी हो गयी थी। कांग्रेस के नेताओं ने 'चौकीदार चोर' का नाम दिया जाने के बाद मुआवजे की मांग की जाती है। राजनीति के दलदल में एक विषेष समृद्धि को सुख करने के लिए कोई कुछ नहीं बोलता है। वह अच्छी परंपरा नहीं है। स्वभाविक सी बात है कि अगर कोई नई में भर भवानया तो पानी आवंगा ही। अखिल उस आवंगी को बसने की खुली छूट किसे दी? इन सवालों के ज़ंगल में आज भी कई अनुरूपत फ्रेश आ खड़े हो जाते हैं। बावजूद

के हक का पैसा नहीं है, यह मध्यमवर्गीय परिवारों के हक पर भी कुठाराघात है जो समय पर सारी ईएमआई, कर और अन्य प्रकार के भूतान करते हैं और बजट में जरासी राहत पाने का इंतजार करते रहते हैं। देखा जाये तो मोदी सरकार जब भूष्याचारियों के खिलाफ ईडी की छापेमारी करवाती है तो घर्मण्डिया गठबंधन के सारे नेता एकत्र हो जाते हैं और अरोप लगाते हैं कि लोकतंत्र की हत्या की जा रही है। यही नहीं, ईडी के समन को तवज्ज्ञों नहीं देते हुए नेता चुनावी रैलियों के लिए निकल जाते हैं और कहते हैं कि मोदी सरकार हम पर अत्याचार कर रही है और हम ऐसे समन से डरते वाले नहीं हैं। लेकिन बकर आ या यहा है कि अरोपियों के मन में कानून का डर पैदा किया जाये। सबाल उठता है कि यह लुट और डकैती नहीं तो क्या है कि राजनीतियों के घर से सामान्य बैंक ब्रांचों से ज्यादा कैश बरामद हो रहा है।

किया गया है। इस लेख का मुख्य उद्देश्य मार्केटिंग पुण्य नामक एक प्रसिद्ध पुण्य में से मनमानी और शास्त्र विश्वद्वारा धार्मिक प्रशान्तों के बारे में व्याख्या करना है जो पहले ऋषियों, मुनियों, देवताओं और हमारे पूर्वजों द्वारा किये जा रहे थे, जिससे उन्हें कोई आव्यासिक लाभ नहीं मिल सका बल्कि वे जम और मृत्यु के दुःखों में बोरे रहे। ना ही उनके विकार भंग हो सके बल्कि वे शैतान / ब्रावाल के जाल में ही फँसे रहे।

पुराण कंठकथाओं, मिथकों, पारंपरिक विद्या से संबंधित तथ्यों को दर्शाने वाले द्विदं प्रथा हैं। हालांकि पुण्य मुख्य रूप से संस्कृत भाषा में लिखे गये थे, लेकिन वर्तमान में पुण्य का अन्य भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध है।

पुण्य मुख्यतः साधु, संतों, ऋषि और मुनियों के व्यक्तिगत अनुरूप वर आव्यासित सच्ची कहानियों के द्वारा गढ़ घूमते हैं। 18 पुण्यों में मार्केटिंग पुण्य स्थान रखता है। (क्रमशः)

आइये सुनें कथा

ब्रह्म-काल के इस शापित संसार में सुख का नामोनिशान भी नहीं है क्योंकि यहां काल ने प्रत्येक व्यक्ति में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, मान-समान, सुख-दुःख, प्रेम-छूटा, अद्वितीय व्यक्ति को लेकिन अनेकों विकार भर दिये हैं। स्वतान्त्र से भटके हुए भोले भाले लोग शापितूर्ण जीवन जैसे के लिए तथा दुखों व दोषों से छुटकारा पाने के लिए विभिन्न धार्मिक क्रियाएं करते हैं।

कांग्रेस के राजसभा सांसद धीरज प्रसाद साह के परिसंग से नकदी के चला, कांग्रेस के नेताओं ने उद्योगप्रौद्योगिक अडानों पर निशाना उठाये हैं जो निवारित कर दिया था लेकिन जल्द ही पार्टी में उनकी बहाली भी गयी थी। कांग्रेस के नेताओं ने 'चौकीदार चोर' का नाम दिया जाने के बाद मुआवजे की मांग की जाती है। राजनीति के दलदल में एक विषेष समृद्धि को सुख करने के लिए कोई कुछ नहीं बोलता है। वह अच्छी परंपरा नहीं है। स्वभाविक सी बात है कि अगर कोई नई में भर भवानया तो पानी आवंगा ही। अखिल उस आवंगी को बसने की खुली छूट किसे दी? इन सवालों के ज़ंगल में आज भी कई अनुरूपत फ्रेश आ खड़े हो जाते हैं। बावजूद

इन दिनों
सियासत अपने रंग-दंग बदलती है जिसकी पटकथा समय लिखता है, जो समय के साथ नहीं बदलता, समय उसे बदल देता है। समय की गति को समझने में कांग्रेस का शायद चाचा था।

डॉ. मेम्प ठाकुर
कोरम पूरा किया जाता है। वह चिन्ना की बात है। शहर के तालाब, नदियों अतिक्रमणकारियों के कब्जे में हैं। ऐसे में इस ओर सरकार को ध्यान देने की जरूरत है। ऐसा नहीं होने की स्थिति में आने वाले दिनों में स्थितियां और भवानक होने की संभावना है। ग्राज्य में वह समस्या बड़ी है। देखा जाये तो कई जगहों पर शांतिप्रिय लोगों के निजी जीवन इससे प्रभावित हो रहे हैं। यह गिरोह पहले उत्तर जमीन को कब्जा करने के लिए किसी संस्थान या धार्मिक स्थल का झंडा गाड़ा है। बाद में धीरे-धीरे उस जमीन को कब्जा करता है। इस काम में सबकी सहभागिता रहती है।

होना, प्रदेश स्तरीय जमीनी मुद्दों को नकारा, वहां के नेताओं-कार्यकर्ताओं का अपमान-तिरस्कार करना और दिल्ली बुलाकर खुलेआम लज्जित करने वाले कारण प्रमुख हैं। अब जब इनके लिए वहां से दल दे रहे हैं, जो कभी उनके सहयोगी होते थे, या फिर कांग्रेस के गर्भ से ही निकले हैं। कांग्रेस

का मरना इसी बात का तो सबसे ज्यादा है कि उनके सियासी विद्याय का रिजल्ट आया, उसमें मात्र सिंगल सीट कांग्रेस को मिल पाई। पार्टी की इतनी बुरी हार, ऐसी दुर्गति होगी जिसकी कल्पना भी शायद कांग्रेसियों ने सपने में कभी नहीं की होगी। उन्हें पटकनी ऐसे दल दे रहे हैं, जो कभी उनके सहयोगी होते थे, या फिर कांग्रेस के गर्भ से ही निकले हैं। हाल ही में मिजोरम स्थानीय नेताओं की इतनी बुरी हार हो गई। यहां पर्वतों वाले जिसका नाम नहीं है, यहां पर्वतों का देवदार चुनाव का रिजल्ट आया, उसमें मात्र चुनाव सीट कांग्रेस को मिल पाई।

पार्टी की इतनी बुरी हार, ऐसी दुर्गति होगी जिसकी कल्पना भी शायद कांग्रेसियों ने सपने में कभी नहीं की होगी।

हाल ही में मिजोरम स्थानीय नेताओं की इतनी बुरी हार हो गई। यहां पर्वतों का देवदार चुनाव का रिजल्ट आया, उसमें मात्र सिंगल सीट कांग्रेस को मिल पाई।

पार्टी की इतनी बुरी हार हो गई। यहां पर्वतों का देवदार चुनाव का रिजल्ट आया, उसमें मात्र सिंगल सीट कांग्रेस को मिल पाई।

पार्टी की इतनी बुरी हार हो गई। यहां पर्वतों का देवदार चुनाव का

